Title: Further discussion regarding atrocities committed on minorities in various parts of the country raised by Shri Arif Mohammad Khan on the 8th December,1998. (Concluded)

PROF. P.J. KURIEN (MAVELIKARA): Sir, first of all, I would say that I will not take much time. But I would confess that having listened to the debate in this House, I felt a little bit sorry because on either side, the trend of the discussion was as if we are trying to divide the House. That is not correct. We should not have done that.

My first point is that the atrocities on the minorities are on the increase. It is a fact and even the Government has not denied it. The atmosphere of intolerance has developed. I agree that it is also correct. But that should not be a reason to divide the communities or religions. We should find out the root cause and try to find remedies. The root cause is simple. I will be frank in telling this. It is a misinterpretation of the Hindu ethos by a small group which led to this situation. We read in the Vedas and the Upanishads about the Vasudeiva Kutumbakam. It means that the world is one family. In the Bhagavad Gita, we read that like all the rivers reach the sea, all faiths reach the Ultimate Truth, the God. We have the answer to the man's search for the Ultimate Truth in Aham Brahmasmi and Tat Tvam Asi. If these are the tenets of the Hindu religion, how can a small section of people misinterpret it and develop intolerance?

I would submit that intolerance is totally out of place as far as Hinduism is concerned. Being a Christian myself, I have no hesitation to say that Hinduism is one of the most tolerant religions in the world. I have no hesitation to say that.

In Cochin, if you go today, there is a Jewish Synagogue. Hundred years Before Christ, Jews came to India. They lived in peace and harmony till a couple of years back. Even today there are about seven Jewish families. In the first century A.D., Saint Thomas, a disciple of Jesus Christ, came to Kerala. He was received by the Hindu ruler. We have Christianity in Kerala from the first century A.D. And till we got Independence, Christians were protected--I underline the word `protected'--there, by the Hindu rulers. Near my village there is a place called Kallupadam. My friends will be knowing that. There, we have a church which is separated only by a wall from a temple. The church is 500 years' old.

The Hindu ruler found a dead body of a Christian being taken to a distant place through the Mani Mala River. Having seen the body being taken to a distance place, the Hindu ruler called that family and asked: "Where are you taking the body?" The family replied, "To a distant place for burial." Then, the ruler said, `Have a Church here, have a burial ground here.' The church which is 500-year old is even today separated only by a small wall from a temple. It is only seven kms. from my residence. The name of the place is Kallupadam. This is the great tradition of this country. Does the Hindu ethos or tenets or tolerance of our great tradition has no place? That is one thing.

Secondly, why has this intolerance developed? This is the basic question. A small group, the frontal organisation of the ruling party, wrongly understands the perception of Hinduism, spreads intolerance and naturally reaction is there from the other side also. Therefore, this kind of thing is happening.

Today, we are unnecessarily taking it beyond a point. Let us find corrective measures. The Muslim community is the largest minority. In Kerala, I would say, in two-three districts, they were living in full harmony for centuries. Nobody will say that any Muslim there is not a patriot. Nobody will say that any Christian is unpatriotic. We have no such charge that anybody is calling any Christian or any Muslim, unpatriotic or anti-national. We have no such charge. That is not the issue here. The basic issue is that atrocities are actually committed on some sections of minorities. What is the solution? I have a solution.

The hon. Home Minister is saying that his Government will take steps. When will your Government take steps? Is it after atrocities are committed? What is needed is prevention of atrocities. Can you prevent it? It can be prevented only by a political decision. We want the political leader in the hon. Home Minister, Shri Advani, to ensure that the frontal organisations of the B.J.P. do not encourage intolerance in the country.

16.10 hrs (Mr. Speaker in the Chair)

Coupled with that, if they take governmental actions, then this can be sorted out. I do not think that this can be stopped only by Government action. Therefore, I would request the hon. Minister of Home Affairs to please see the political aspect of it and ensure that the Ruling Party and its frontal organisations do not resort to such a campaign which will encourage atrocities on the minorities, so that they are forced to believe that the Government of the day is supporting them in these atrocities. I hope that he would give an assurance to this House in this regard.

With these words, I conclude my speech.

गृह मंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी): मान्यवर अध्यक्ष जी, श्री आरिफ मोहम्मद खां ने पिछले सप्ताह जिस बहस का आरंभ किया, उसमें अनेक सदस्यों ने भाग लिया और कुल मिलाकर जो चर्चा हुई है, वह बहुत सार्थक हुई है। मैं सभी वक्ताओं के प्रति आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने एक महत्वपूर्ण समस्या की ओर सदन का ध्यान दिलाया है। उस समस्या के विषय में हमारी जो कमी है, उसको भी उन्होंने सदन के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की। मैं सबके प्रति आभार प्रकट करते हुए विशेष रूप से प्रोफेसर कुरियन के प्रति आभार प्रकट करूंगा कि उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस चर्चा के दौरान कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे मानो हम सदन को भी विभाजित कर रहे हैं और देश को भी सम्प्रदायों के आधार पर विभाजित कर रहे हैं, जो कि होना नहीं चाहिए था। इसलिए उन्होंने उस पर खेद व्यक्त करते हुए यह कहा कि किसी सम्प्रदाय के लिए राष्ट्रविरोधी आदि कहना, अगर कोई कहता है तो गलत है लेकिन शायद कहा भी नहीं है।

मैं १९७० में पहली बार संसद में आया था जब मैं राज्य सभा में निर्वाचित हुआ था। तब से लेकर आज तक दो वर्ष बीच के छोड़कर, जब १९९६ में मैंने चुनाव नहीं लड़ा, उन दो वर्षों को छोड़कर बाकी शेष समय अर्थात् २६ साल मैं संसद में रहा हूं। इन २६ सालों में प्रायः हर वर्ष यह चर्चा होती रही। कोई वर्ष ही नहीं बीतता था जब साम्प्रदायिक तनाव, साम्प्रदायिक हिंसा और साम्प्रदायिक दंगों आदि पर चर्चा न हो। जैसे उस दिन नक्वी जी कह रहे थे कि पूरी चर्चा लाशों की गिनती पर होती थी कि किस दंगें में कितने लोग कहां मरे, कितने हिन्दू मरे, कितने मुसलमान मरे, प्रायः यही चर्चा होती थी। उसमें किसका दोष है, यह सरकारें बदलती रहीं। अधिकांश समय इन २८ सालों में कांग्रेस पार्टी का शासन रहा। मैंने तब भी यही भाषा सुनी कि जो अल्पसंख्यक हैं, वह अपने को इस शासन में असुरिक्षत अनुभव करते हैं। ऐसा बोलने वाले सब लोग होते थे। उधर जो बैठे हुए लोग थे, जो इधर होते थे, वह भी यही बोलते थे। उस समय यहां जो बैठे हुए लोग थे, वही रहते थे जो नहीं बोलते थे। वे कहते थे कि बहुत सुरक्षित हैं। किसी भी प्रकार का कोई संकट नहीं है।

मैं इस नाते इस बार की चर्चा को एक अभूतपूर्व चर्चा मानता हूं, सर्वथा अपूर्व चर्चा मानता हूं, यूनीक चर्चा मानता हूं जिसमें गुणात्मक परिवर्तन है।

There is a qualitative change in the nature of debate on the communal questions.

साम्प्रदायिक विषय पर चर्चा का इस बार, दो घंटे की चर्चा शायद दस घंटे चली है,

... (व्यवधान)

बारह घंटे चली होगी, लेकिन बारह घंटे की चर्चा में भी पूरी देर इस बात पर फोकस रहा कि अमुक व्यक्ति ने यह वक्तव्य क्यों दिया, कैसे दिया। संगमा साहब जो इस सदन के सम्माननीय सदस्य हैं, ने अपना पूरा बयान इस बात पर केन्द्रित किया कि आपकी विचारधारा समस्या है। उन्होंने हमारे मैनीफैस्टो से कोट करके कहा, आपका यह कथन कि हिन्दुस्तान में एक राष्ट्र, एक जन, एक संस्कृति है और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कल्पना आज की समस्या का मूल है। वैसे मुझे बहुत खुशी हुई कि उनमें तो वक्तव्य भी नहीं थे, किसी एक-आध वक्तव्य का उल्लेख किया होगा, लेकिन घटनाओं का तो उन्होंने उल्लेख किया ही नहीं जिसे ऐट्रॉसिटीज कहा जाए क्योंकि ऐट्रासिटीज एक बहुत बड़ा शब्द है। मैं मानता हूं कि इन दिनों इधर-उधर से जो सूचनाएं मिलीं

These can be called excesses. These may even be called injustice somewhere.

सरकार का कर्तव्य है कि यदि कहीं पर ज्यादती होती है, कहीं पर अन्याय होता है, बेइन्साफी होती है तो उसके बारे में कदम उठाए और जो सरकार बेइन्साफी के खिलाफ, अन्याय के खिलाफ, ज्यादती के खिलाफ कदम नहीं उठाती वह निश्चित रूप से लोगों में असुरक्षा का भाव पैदा करेगी, और फिर जो बात बनातवाला जी ने कही कि अल्पसंख्यक असुरक्षित अनुभव करते हैं, उसमें वजन आ जाएगा। लेकिन यदि कदम उठाए तो फिर असुरक्षा की चर्चा नहीं होनी चाहिए, यह मैं अनुरोध करूंगा क्योंकि यदि हिन्दुस्तान के अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की मानसिकता पैदा होगी तो निश्चित रूप से देश को नुकसान होगा। अगर मेरी सरकार इस असुरक्षा की मानसिकता का निराकरण नहीं कर सकती तो हम शासन का कार्य चलाने में सफल नहीं हो सकेंगे क्योंकि मैं हमेशा मानता हूं कि अच्छा शासन, जिसे हमने कहा कि हम पचास साल पहले प्राप्त स्वराज्य को सुराज में बदलना चाहते हैं, तो सुराज का पहला लक्षण सुरक्षा है। अगर कोई भी नागरिक अपने को असुरक्षित अनुभव करे तो इसका मतलब है शासन में कमी है। लेकिन मैं अपने सभी सदस्यों, सभी पार्टियों से अनुरोध करता हूं कि यदि हमारी ओर से ज्यादती को रोकने की कोशिश न की गई होती तो आप दोष निकालते। मैं मानता हूं कि आजकल फायर फिल्म को लेकर बड़ा विवाद चल रहा है। मैंने वह फिलम् देखी नहीं है लेकिन जब मैं उसका वर्णन पढ़ता हूं तो मन में ग्लानी होती है कि ऐसी फिल्में क्यों बनती हूं। अमरीका के लिए ठीक होगा, पश्चिम के लिए इस प्रकार की चीजें ठीक होंगी कि लैसबियनिज्म पर पूरी फिल्म बनाओ, लेकिन हिन्दुस्तान के सारे वातावरण में क्या वह सूट करती है। फिर भी जब मुझे पता लगा कि किसी ने सिनेमा हाल में जाकर तोड़-फोड़ की, यह कर दिया, वह कर दिया, तो मैंने स्वयं पुलिस कमिश्नर से कहा कि यह नहीं चलेगा, वे चाहे मेरे सहयोगी दल के मैम्बर होंगे, लेकिन आपको उचित कार्यवाही करनी चाहिए। मुझे पता लगा कि मुम्बई में इस प्रकार का प्रदर्शन हुआ जिसमें एक पार्टी के लोग कपड़े निकालकर, केवल कच्छा पहनकर वहां गए और प्रदर्शन किया, नारे लगाए। मुझे भले ही वह फिल्म पसंद न आए लेकिन मैंने कहा कि इस प्रकार का प्रदर्शन जिसमें वैनडलिज़्म हो या इनडीसैंसी हो, लोकतंत्र में नहीं चलेगा।

शासन का कर्तव्य हो जाता है कि अपना काम करे। असुरक्षा का भाव किसी में पैदा नहीं होना चाहिए, असहिष्णुता का भाव बढ़ना नहीं चाहिए, चाहे कल हमारे शिव सेना के नेता, वे इस समय हैं नहीं, लेकिन उन्होंने अध्यापकों के किसी प्रदर्शन का जिक्र किया कि किस प्रकार के अध्यापक आये थे, वे कम्पीट कर सकते हैं इस प्रकार की बात में, लेकिन मैं दोनों को गलत मानता हूं, किसी भी प्रकार का प्रदर्शन को। लोकतंत्र में सौम्यता, शिष्टाचार का भी एक स्थान है। इसलिए मुझे इस बात की प्रसन्नता है, संतोष है कि १० घंटे की इस चर्चा में हत्या और हिंसा की चर्चा नहीं हुई, उपद्रवों और उत्पात की चर्चा नहीं हुई। चर्चा है तो यह बयान क्यों दिया, चर्चा है तो हमारे घोषणा-पत्र में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चर्चा क्यों की है, एक संस्कृति की बात क्यों आती है।

SHRI S. JAIPAL REDDY (MAHABUBNAGAR): Sir, would the hon. Home Minister yield to me?
Mr. Speaker Sir, I am thankful to the hon. Home Minister for having yielded. While one can discuss the merits of a particular film, how does the hon. Home Minister view the tendency to turn every question into Hindu-Muslim question? The corollary to the same is whether receiving honour from a country like Pakistan which has been observed as... (Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: I am sorry, I do not want to be drawn into this.
SHRI S. JAIPAL REDDY : Does the hon. Home Minister recall that Shri Morarji Desai was also given the same award?

SHRI L.K. ADVANI: I am sorry, it is not a valuable intervention. I do not want to be drawn up at a tangent. I am not discussing either `Fire' or `Dilip Kumar'. I may have much to say about that. I may agree with many things that these people may be saying. But if they were only saying it, I would not contradict it. But the moment they take the law into their hands, indulge in vandalism, or indulge in indecency, I have a duty. Therefore, I have done it. I am not discussing either the film or participants or those who are supporting it. I am not discussing... (Interruptions)
SHRI S. JAIPAL REDDY : I am discussing it.
SHRI L.K. ADVANI: Please, you have drawn yourself into a different direction. We are concerned, at the moment, that no citizen in this country -irrespective of whether he belongs to a minority or a majority, this minority or that minority -- should feel unsafe.
Sir, let me recall history. What was the basis of partition? The success of Muslim League achieved in creating a sense of insecurity in the Muslim community that `if India is not divided, India remains undivided as the Congress wants it, the result will be that you will be underlings to the Hindu majority' and remain insecure.
I am not going into the details of the attacks that were made on Gandhiji those days. After all, it was Gandhiji, who talked about Ramrajya

राम राज्य की चर्चा मैंने नहीं की। पहली बार अगर किसी ने राम राज्य की चर्चा की, एक नौजवान ने, एक विद्यार्थी ने गांधी जी से पूछा कि आप हमको कहते हैं कि स्वराज के लिए त्याग करिये तो आपकी स्वराज की क्या कल्पना है, हमको बताइये। उन्होंने कहा कि इस समय मैं भाषण तो नहीं कर सकता, लेकिन अगर एक शब्द में तुमको बताऊं तो मैं कहूंगा कि स्वराज होगा, राम राज्य।

Now here in India, Ramrajya concept has always been something of an ideal kingdom

यह कल्पना बहुत पुरानी है। ... (

Interruptions) Please, it is not going to be a conversation between us... (Interruptions)
SHRI BASU DEB ACHARIA : Gandhiji's concept of Ramrajya and his concept of Ramrajya is quite different... (Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: I am not yielding... (Interruptions) I do not want anyone to support me, please... (Interruptions)
PROF. SAIFUDDIN SOZ (BARAMULLA): Gandhiji's concept was different.
SHRI L.K. ADVANI: I am aware of it.

आप धीरे-धीरे कहेंगे, जैसे आरिफ साहब ने पहले-पहले ही उसका जिक्र किया, अयोध्या का जिक्र तो कई लोगों ने किया, लेकिन आरिफ साहब ने अपना भाषण देते हुए शुरू-शुरू में ही कहा कि क्योंकि अभी छः दिसम्बर बीता है, आज १६ तारीख है, छः दिसम्बर को २-३ टेलीवीजन के कोरेस्पोंडेंटस मेरे पास आये।

उन्होंने आकर कहा कि आज ६ दिसम्बर है, आज से छः साल पहले ६ दिसम्बर को जो हुआ था उस पर हम आपसे आपकी प्रतिक्रिया जानना चाहते हैं। साधारणतः मैं इस विषय पर पिछले सात-आठ महीनों में कुछ नहीं बोला। उस दिन चूंकि ६ दिसम्बर था, उन्होंने सवाल पूछा और मैं कहता कि मुझे कुछ नहीं कहना तो शायद वे कुछ गलत अर्थ समझते। मैंने कहा कि वह दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी, नहीं होनी चाहिए थी। उस घटना के कारण मेरी पार्टी को मेरे कॉज़ को धक्का लगा, मुझे व्यक्तिगत रूप से भी धक्का लगा। उसके बाद आरिफ साहब ने अपनी बात में उसको कहा और स्वागत किया। साथ ही यह भी कहा कि अगर आडवाणी जी ने छः साल पहले यह बात कही होती तो हो सकता है उस घटना के बाद जो बातें हुईं, वे न होतीं।

This is what Shri Arif Mohammad Khan has said. Am I right?
SHRI ARIF MOHAMMED KHAN (BAHRAICH): Yes.

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः मैं यह चीज इसी रामराज्य के सन्दर्भ में कहता हूं। आप जब कहते हैं कि गांधी जी की कल्पना रामराज्य की अलग थी, आपकी कल्पना अलग है। यह परज्यूम करने वाले भी इस बात की भी कोशिश नहीं करते कि मैंने जो कहा है तो क्या कहा है। उसी प्रकार से जिस प्रकार से ६ दिसम्बर के बारे में अभी मैंने बात कही तो किसी ने सम्पादकीय लिखा, एट लास्ट, आखिर आडवाणी जी ने माना कि ६ दिसम्बर की घटना दुर्भाग्यपूर्ण थी।

श्री बसुदेव आचार्य : छः साल बाद माना।

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः मैं अभी उस पर आता हूं।

SHRI S. JAIPAL REDDY : Better late than never. ... (Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: Better late than never. This is true. This is exactly what I say. We are not common people. It is often said,

कहा जाता है कि सामान्य लोग जो हैं,

They have a very short memory.

उनको कुछ याद नहीं रहता, इसीलिए पुरानी बात वे भूल जाते हैं। राजनीति में जो प्रमुख हैं, मैं मानता हूं जो लोक सभा का सदस्य बनता है और लाखों लोगों का प्रतिनिधि बनता है, वह निश्चितरूप से प्रमुख है। सांसदों को इस प्रकार की सलेक्टिव मैमोरी नहीं रखनी चाहिए। सलेक्टिव अमीनिशिया का चार्ज मुझ पर लग सकता है। लेकिन मैं तो इतना ही कहूंगा कि मैंने अभी जो एक शब्द का प्रयोग किया ठदुर्भाग्यपूर्ण', मैंने इतना ही कहा,

I regard that as an unfortunate incident.

लेकिन जब ६ तारीख को घटना हुई तब उस दिन जिन लोगों ने मुझे देखा था, उसका वर्णन नहीं करूंगा, लेकिन २७ दिसम्बर, १९९२ को मैंने कोई छोटा-मोटा वक्तव्य या एक छोटी टिप्पणी नहीं की थी, पूरा लेख लिखा, वह फुल पेज आर्टिकल ठइंडियन एक्सप्रेस' ने पहले पेज पर छापा। कलकत्ता क

जो ठटेलीग्राफ' है, उसने तीन आर्टिकल्स को मिलाकर पूरा पेज छापा। उसका एक पैराग्राफ मैं पढ़ूंगा। ठअनफार्चुनेट' की तुलना करने के लिए कि मेरी प्रतिक्रिया उस समय जो थी, वह क्या थी। मैंने कहा-

"This year's Kar Sewa day at Ayodhya on December 6th turned out to be one of the most depressing days in my life. Of course, many others there were ecstatic with joy, a mood I just could not share. I have seldom felt as dejected and downcast as I felt that day."

केवल इसलिए क्योंकि मैं मानता हूं और मैंने साथ-साथ यह भी विस्तार से लिखा कि मेरा दुःख किस कारण से था।

मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूं कि जो कहते हैं कि गांधी जी की हत्या के बाद यह हो गया और वह हो गया। मैंने कहा कि मैं इस प्रकार की कल्पना नहीं करता हूं, उसका मैंने वर्णन किया है। आज का संदर्भ मैं नहीं मानता हूं लेकिन मैं यह जरूरी मानता हूं कि मैं बहुत दुखी हूं, बहुत दुखी था क्योंकि कल्पना दूसरी थी। मुझे अयोध्या के आंदोलन के बारे में गर्व है। बहुत जबर्दस्त आन्दोलन था लेकिन मेरी दृष्टि से मैं उसको वोट बैंक की राजनीति के खिलाफ आंदोलन मानता था। मैं उस पर विस्तार से कह सकता हूं लेकिन आज प्रसंग नहीं है। इस समय इतना ही कहूंगा।

Shri Jaipal Reddy, I do not want you to agree with me. I do not expect that. All I say is that let us not be unfair to anyone.

इसलिए कुरियन जी ने जो कुछ कहाः

So, at least, I found a refreshing change from the preceding speeches and, therefore, I welcome it. It is not that I agree with him.

बड़ा अनर्थ हो गया और बहुत घटनाएं हुई हैं, बहुत अत्याचार हुए हैं।

I do not agree with it.

क्योंकि घटनाएं लगातार होती रही हैं। यह मेरे पास पूरे दस साल का चिट्ठा है। ... (व्यवधान)

श्री राजो सिंह (बेगूसराय): हमें आंकड़े नहीं सुनाइए।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Rajo Singh, you are always disturbing the House.

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः मैं दस साल के आंकड़े नहीं सुनाऊंगा। यह दस साल के आंकड़े हैं। हर साल १९८९ से लेकर १९९८ तक साम्प्रदायिक हिंसा में कितने लोगों की मृत्यु हुई है और उसमें मैं देखता हूं कि इन दस सालों में लोएस्ट फिगर्स अगर कोई हैं तो वे १९९८ की हैं, इसलिए मेरे मन में संतोष है कि अगर मैंने कहा कि हमारी सरकार आएगी क्योंकि आखिर में कैम्पेन के दौरान जनवरी में, देश भर में मैं गया था और ऐसे स्थान थे जहां के मैंने भाषण सुने और वहां के मुख्य मंत्रियों ने कहा कि वाजपेयी जी की सरकार अगर नई दिल्ली में आ जाएगी तो देश में खून की नदियां बह जाएंगी, दंगे हो जाएंगे। मैं यहां पर किसी का नाम नहीं लूंगा लेकिन मैंने सुना और उस समय मैंने जवाब भी दिया और मैं एक्चुअली देखता हूं।

Figures vary and from 1,000 to 2,000 people had died.

यह हमारे इस साल के १९ अक्तूबर के ३१ तारीख तक १६२

is the strenth of people there.

वे कई प्रकार के होंगे। जहां तक हिन्दू मुसलमान का सवाल है, अभी-अभी किसी ने कहा है कि आप पिछसे साल और इस साल का भी कम्पेरीजन करके बताइए। कोई जरूरत नहीं है।

I do not want to compare even with last year when Shri Jaipal Reddy was in Office, about the number of people who died.

मैं उसकी जरूरत नहीं समझता क्योंकि अगर कम मरें या ज्यादा मरें, मेरा कहना है कि मरने ही नहीं चाहिए। हिंसा नहीं होनी चाहिए, साम्प्रदायिकता नहीं होनी चाहिए। सुरक्षा का भाव एक-एक को मिलना चाहिए और मेरा फर्ज बनता है क्योंकि मुझे सरकार में आते हुए भी अगर सबसे बड़ी कठिनाई कोई लगती थी तो वह चारों ओर का वातावरण फैला हुआ था कि इनकी सरकार आएगी तो दंगे हो जाएंगे, माइनॉरिटीज असुरक्षित हो जाएंगी, इसलिए मैं आउट ऑफ दि वे जाकर केशू भाई पटेल जी से बात करता हूं क्योंकि जो भी करता है, जहां पर करता है। मैं सबसे ज्यादा चिंतित हुआ जब मध्य प्रदेश की झाबुआ की बात मैंने सुनी।

because I was horrified, I was totally digusted.

कोई जाकर नन्स के ऊपर इस प्रकार बलात्कार करे या किसी स्थान पर जैन साध्वियों पर किया।

It is the same kind of thing. Those who have devoted themselves to religion.

जीवन भर वे इस प्रकार से कमजोरी से युक्त रहेंगे, उनके ऊपर जाकर जो बलात्कार करें, वे दैत्य हैं, वे जघन्य अपराध करते हैं और जैसे ही मुझे पता लगा तो मैंने मध्य प्रदेश की सरकार से जानकारी प्राप्त की और जानकारी प्राप्त करने के बाद वहां से किसी ने फोन किया कि वहां पर हिन्दू और क्रिश्चियन का मामला बन रहा है जो सही नहीं है। मैंने मध्य प्रदेश की सरकार को ही कहा कि आप बताइए कि किस-किस धर्म के लोग हैं क्योंकि आपने बताया कि ये सब के सब

ट्राइबल्स हैं। मैं इससे संबंधित नहीं हूं कि उनका राजनीतिक झुकाव क्या है, इसका मुझसे कोई संबंध नहीं है। लोगों ने मुझसे कहा कि आप इस मामले को उठाइए। मैंने कहा कि मैं नहीं उठाऊंगा।

मुझे कोई लेना देना नहीं है। लेकिन आप इसको जरूर बताइए और जैसे ही उन्होंने मुझ को फीगर्स भेजे और कल किसी सदस्य ने खड़े होकर कहा कि आडवाणी जी गलत बोले। मैंने कहा - देखो, अगर गलत बोला हूं, तो मध्य प्रदेश की सरकार ने जो बताया, मैं वहीं बोला हूं। मैने कुछ और नहीं बोला है। मुझे जानकारी नहीं है, क्योंकि और कोई सोर्स नहीं है। मध्य प्रदेश की सरकार ने मुझको पत्र लिखकर दिया कि २४ लोग हैं और उनको नाम भेजे। इन २४ लोगों में से ये १२ ईसाई हैं और १२ हिन्दू हैं। यह मुझे भेजा है और मैंने वहीं बताया। यह बात मैंने इसलिए नहीं कि वे ईसाई हैं, लेकिन इसलिए कही कि मैं चाहता हूं कि इस प्रकार की घटनाओं को, इस प्रकार की हत्याओं को कोई भी साम्प्रदायिक रंग देने की कोशिश न करे। लेकिन दुर्भाग्य से हुआ है। झाबुआ की घटना के कारण हिन्दुस्तान भर में हजारों स्कूलों के अनेक बच्चे बाहर निकल कर आए और उन्होंने प्रोसैशन निकाले। मैं समझता हूं कि यह हमारा कर्तव्य था कि हम इस बात का तुरन्त प्रतिवाद करते। मेरे पास एक विदेश के राजदूत आए और कहने लगे कि यह क्या घटना हुई है? मैंने बताया और वे सुनकर चुप हो गए। उनके पास कहने को कुछ नहीं था। यह बात सुनने के बाद सारी बातें बेकार हो गई। अलबत्ता मैं मानता हूं, जिस विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता ने यह बयान दिया, वह सरासर गलत दिया। गलत ही नहीं दिया, मैंने उनके जो सबसे बड़े अधिकारी थे, उनसे कहलवाया और सबसे बड़े अधिकारी ने तुरन्त बयान दिया। घटना की निन्दी की, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि यहां पर बैठे हुए इतने लोगों ने झाबुआ का जिक्र किया, किसी ने भी अशोक सिंघल और गिरिराज किशोर के बयान का जिक्र नहीं किया। हरेक वी.एल. सिंघल का जिक्र करता रहा।

Once again, there is selectivity in the matter of even statements.

यह क्या हम को आगे बढ़ाएगा? यह क्या अच्छा करेगा, भला करेगा?

We quoted Shri K.L. Sharma. We refused to quote Shri Ashok Shinghal who is certainly their tallest leader.

उनके जो सबसे बड़े नेता है, उनका जिक्र नहीं। मैं तो इनता ही कहना चाहता हूं कि इस चर्चा में अगर संदर्भ यह होता कि यह घटना नहीं होनी चाहिए, तो मैं उसको स्वीकार कर लेता। मैं तुरन्त कहूंगा कि मेरा कर्तव्य आपसे भी ज्यादा है कि हिन्दुस्तान भर में, खासकर जहां हमारा शासन है, वहां पर किसी भी व्यक्ति में असुरक्षा की भावना न हो और यह हमारा कर्तव्य है।

श्री जी.एम. बनातवाला (पोन्नानी) : महोदय, मैं मुत्तफिक हूं कि हर बात को कॉम्युनल रंग नहीं देना चाहिए। यह अच्छी चीज है। आपने कहा कि उसमें क़िश्चियन्स भी इन्वाल्वड थे। लेकिन जो कहा गया है, उससे लोगों में फिर कन्फ्यूजन पैदा हुआ है। कुछ एसोसिएशन्स की तरफ से कहा गया कि उसमें कोई भी क़िश्चियन नहीं है। जितने गिरफतार हुए हैं, उनमें भी नहीं है और जो गिरफ्तारी से बचे हैं, उनमें भी नहीं है। इस तरह से एक अलग बात जा चुकी है कि आपका बयान खरा नहीं है। इसलिए लोगों में संतोष और इतमिनान पैदा करने के लिए, क्या आप इसकी मज़ीद छानबीन करके और अपनी छानबीन

CBI

या किसी भी तरीके से करवाकर, इस बात को भी खुले तौर पर आवाम के सामने पेश करेंगे?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी: जिन्होंने उसका प्रतिवाद किया, उसमें एक भी तथ्य का उल्लेख नहीं था, लेकिन उस प्रतिवाद के बाद गृह मंत्रालय की ओर से जो अधिकृत सूचना मध्य प्रदेश की सरकार ने हमको दी थी, उसको ज्यों-की-त्यों हमने प्रैस को रिलीज किया। सब नाम दिए हैं कि कौन उनमें ईसाई है, कौन उनमें हिन्दू है । इसका विवरण हमने प्रैस को दिया है। आप चाहेंगे, तो मैं सदन को भी उसको दे सकता हूं, मुझे कोई दिक्कत नहीं है। मैं इतना ही मानता हूं, उनको भी शायद धक्का लगा होगा कि हमने इतने दिन इस आधार पर कैम्पैन किया, उस कैम्पेन का धरातल निकल गया। मैं किसी को दोष नहीं देता हूं, लेकिन उन्होंने सहज रूप में प्रतिवाद कर डाला कि नहीं गलत है। जब प्रतिवाद कर डाला, तो मैंने गृह मंत्रालय से कहा कि आप केवल यह मत कहिए कि उनमें से कुछ क़िश्चियन्स थे। आप सबके नाम दे दीजिए और तारीख भी बता दीजिए, जिस दिन मध्य प्रदेश की सरकार और उनके अधिकारी ने पत्र लिखा है, वह आफिशियली दे दीजिए और उन्होंने दे दिया। मैं समझता हूं कि इसमें और ज्यादा करने की जरूरत नहीं है। वैसे संगमा जी ने जो विचारधार की बात उठाई थी, उसका काफी अच्छा उत्तर उमा जी ने दे दिया है। उमा जी ने यह भी बताया कि मैं अगर इस मामले में सैक्युलर हूं, तो मैं इसलिए नहीं हूं कि मैं कोई ईसाई स्कूल में पढ़ा हुआ हूं।

वह किसी ईसाई स्कूल में नहीं पढ़ी है, वह गांव के किसी स्कूल में पांचवी कक्षा तक पढ़ी है। उनके पूजा घर में जहां कृष्ण भगवान की मूर्ति है वहीं ईसामसीह की भी मूर्ति है, क्योंकि हमें उसमें कोई दिक्कत नहीं है। मुझे इसलिए आश्चर्य हुआ क्योंकि जब कल संगमा जी इस बात पर आपत्ति उठा रहे थे कि आडवाणी जी तो बोद्धों को भी हिन्दुओं का हिस्सा मानते हैं, जो बुद्ध है वह विष्णु के अवतार थे, उन्होंने कल यहां यही बात कही।

महोदय, पिछले महीने सारनाथ में एक बुद्ध सम्मेलन था, जहां विश्व भर से लोग आए थे। वहां अनेक बौद्ध भी थे। वहां मैंने यह बात जरूर कही थी-

"Buddha did not announce any new religion. He was only restating with the new emphasis the ancient ideals of the Hindu-Aryan civilization. He cleanses the faith and the customs that were prevalent then of the dusts that had accumulated, and focussed on the essential ideals of Dharma. The relationship between India and Buddhism is

unbreakable and this inseparableness must be understood by all. India is where Buddham was born and India is where Buddha's legacy lived."

फिर मैंने कहा-

"Budha is an avatar for most Indians and is held in reverence by all sects and sub-sects of the Hindu society."

मैं कोई ऐसी बात नहीं कह रहा हूं जो बुद्धिज़म को कम करने के लिए हो। हमारे यहां जो दशावतार की कल्पना है उसमें बुद्ध भी एक अवतार है। हम में से बहुत से लोगों ने अनेक बार भरत नाटयम का दशावतार, कत्थक का दशावतार देखा होगा, उन सब में एक अवतार बुद्ध जरूर है। बुद्ध ट्रेडिशनल सेंस में आस्तिक नहीं थे, वह ईश्वर के विश्वासी नहीं थे। इसके बावजूद मैंने उसी में कोट किया, मैंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ईश्वर के बड़े भक्त थे, वह आस्तिक थे। उन्होंने बुद्ध और ईश्वर के लिए क्या कहा-

"The life of Buddha shows that a man who does not believe in God, has no metaphysics, belongs to no sect and does not even go to any church or temple, even he can attain to the highest. I wish I had even one infinitesimal part of Buddha's heart. Buddha may or may not have believed in God. That does not matter to me. He reached the same state of perfection to which others come by Bhakti or love of God or Yoga or Thiyana. Perfection does not come from belief or faith. Talk does not count for anything. Parrot can do that. Perfection comes through disinterested performance of action."

उसमें मैंने डिसइंटरस्टेड पर्फोरमेंस ऑफ एक्शन जरूर जोड़ा है। जिसका अर्थ वही गीता का पाठ है, गीता का ज्ञान है। उसमें उन्होंने कहा कि निष्काम योग एवं निष्काम कर्म करो, उसी पर मैंने कहा। कल हमारे संगमा जी आपत्ति कर रहे थे कि इन्होंने भगवतद गीता कैसे कहा।

*m06
SHRI R.S. GAVAI (AMRAVATI): Can you yield one minute? Sir, I do respect your sentiment that in your Buddhist Summit there at Saranath, you said that Lord Buddha is the incarnation. This point appeared in the last World Buddhist Summit in Kathmandu also where I did say it is the own belief of the hon. Minister because I was there in Kathmandu and not in India. But Buddha never claims that he is a God; neither he says that he is a son of God nor he is a messenger.
SHRI L.K. ADVANI: He never said that.
SHRI R.S. GAVAI : He said, "I am a common man" (Interruptions) I am just clarifying. He believes in the relationship between man and man, and on an occasion, when he was preaching lastly his disciple, Anandha, he asked, "Lord, I will expect that you will attain Swarga". Buddha said, "Anandha, I do not believe in Swarga, Narga nor incarnation." It may be your own logic but do not impose upon us that we should accept that Buddha is incarnation. That is not convincing.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं आपका आदर करता हूं और मैं यह कहता हूं कि आपने जो अभी बात कही उसके कारण बुद्ध हमारी नजर में और ऊंचे उठ जाते हैं।

He never claimed to be God. He never claimed to be a messenger of God.

मैने कहा कि हिंदू समाज उन्हें दशावतार मानता है।

SHRI R.S. GAVAI : I do not want to challenge, but my plea is that do not impose anything on us.
SHRI L.K. ADVANI: No, not at all. I have read out exactly. I said: Buddha is an Avatar for most Indians and is held in reverence by all sects and sub-sects of Hindu society, not merely the Baudhs.

अध्यक्ष जी, अब मैं मैनीफैस्टो पर आऊंगा क्योंकि उन्होंने हमारे मैनीफेस्टो को उद्धृत किया और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चर्चा करते हुए उस पर आपत्ति की और कहा कि हम वन कल्चर की बात क्यों करते हैं। उमा जी ने उन्हें कहा कि आप वन नेशन में तो विश्वास करते होंगे, उन्होंने जवाब नहीं दिया। तब उमा जी ने कहा कि आप वन पीपल में भी विश्वास करते होंगे, लेकिन आपकी आपत्ति शायद वन कल्चर पर होगी। वैसे कुछ सदस्य हमारे यहां बैठे हैं जिनको वन नेशन पर भी आपत्ति हो सकती है। कम से कम एक-आध पार्टी ऐसी है जो हिंदुस्तान को वन नेशन की कल्पना नहीं मानती है। वे कहते हैं कि

India is a multinational State...(Interruptions)

उनकी यह कल्पना है, उसका जिक्र मैं बाद में करूंगा, नहीं तो वह भी जरुरी नहीं है।

(Interruptions)
PROF. P.J. KURIEN (MAVELIKARA): Mr. Speaker, Sir...(Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: I am not talking about you.
PROF. P.J. KURIEN : Sir, we have always said that India is one nation; only culture is pluralistic. That is all. I do not think anybody here says it is multinational. Nobody from this side says that.
SHRI L.K. ADVANI: If you want, I can quote to you the memorandum submitted by the CPI(M) to the Sarkaria Commission. I do not want to do it now. This is not the occasion. But they have, in that memorandum... (Interruptions)
SHRI BASU DEB ACHARIA : Do not misinterpret...(Interruptions)
SHRI SURESH KURUP (KOTTAYAM): That mentions about different linguistic groups...(Interruptions)
SHRI BASU DEB ACHARIA : Do not misinterpret. Nationality question is different...(Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: Shri Basu Deb Acharia himself is all right, why should all of you shout?...(Interruptions)
MR. SPEAKER: Please take your seats. Let him complete.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Shri Basu Deb Acharia, let him complete. He is not yielding.
... (Interruptions)
SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, he is misinterpreting...(Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: Shri Basu deb Acharia, you forget that. I simply said that when Kumari Uma Bharati referred to Shri Sangma, she said, "Your objection cannot be to one nation, your objection cannot be to one people, you may be objecting to the concept of one culture", about which just now Prof. Kurien said that it is pluralistic culture. No objection. It is one culture. In every country which is a large country, in every country which is an ancient country, the culture is bound to be pluralistic, the culture is bound to be composite, the culture is bound to have a lot of diversities. You cannot have uniformity. It is inevitable. But the point is, it is one culture...(Interruptions)
SHRI P. SHIV SHANKER (TENALI): The proper expression could be `different facets'.
SHRI L.K. ADVANI: I know that. I am aware of it - different facets. But when I say `one culture', there is nothing wrong about it.

हम १९४७ में आजाद हुए थे और आज वर्ष १९९८ है। मैं नहीं जानता कि कब यहां लोक सभा ने बैठना शुरू किया क्योंकि कांस्टीटूएंट असेम्बली तो वहां बैठती थी, लोक सभा शायद यहां बैठती हो। लोक सभा में यह 'धर्म-चक्र-प्रवर्तनाय' कब लिखा गया, इसका मुझे पता नहीं है। शायद १९४७-४८ में लिखा गया होगा। आज अगर हम बैठते और स्पीकर साहब या प्राइम-मिनिस्टर साहब कहते कि यहां पर 'धर्म-चक्र-प्रवर्तनाय' लिखवाओ तो उसी प्रकार का विरोध होता जैसा विरोध आज संस्कृत का हुआ है, वंदे-मातरम् का हुआ है। मुझे जब पता लगा कि वहां इसे कम्प्लसरी किया जा रहा है तो मैंने वहां के मुख्यमंत्री को कहा कि इसे कम्प्लसरी करने की जरुरत नहीं है। लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि वंदे-मातरम् कहीं होगा तो कोई उसका विरोध करेगा और कहेगा कि मैं स्कूल से अपने बच्चों को हटा लूंगा।

आज सदन में ठवंदे मातरम्' गाया जाता है। हर सैशन ठजन गण मन' से शुरु होता है और हर सैशन ठवंदे मातरम्' से समाप्त होता है। क्या इसके विरोध में सदस्य निकल कर चले जाएंगे? इन दोनों बातों में अन्तर समझिए। कम्पलशन करना एक चीज है और इसके बारे में मैंने अपनी राय बतायी है।

... (व्यवधान)

प्रो. सैफ़ुद्दीन सोज़ : विरोध अलग चीज है लेकिन आप इसे कम्पलसरी नहीं कर सकते हैं।

... (व्यवधान)

SHRI L.K. ADVANI: Let me recall that this matter was discussed at considerable length in the Constituent Assembly.

ठवन्दे मातरम्' के इशू के बारे में काफी डिसकशन हुआ। उस समय भी कुछ लोगों ने कहा था कि ठवंदे मातरम्' नहीं होना चाहिए। सब से चर्चा करने के बाद तय हुआ कि नेशनल ऐंथम ठजन गण मन' को करते हैं। यह दोनों के बीच था।

I will read out from the Constituent Assembly debates. I would read what President Dr. Rajendra Prasad had said on the 24th January, 1950.

२६ जनवरी को फॉर्मली संविधान इम्पलीमेंट हो गया।

It was the last day of the Session and everything had been settled. The President said:
"There is one matter which has been pending for discussion, namely, the question of the National Anthem. At one time, it was thought that the matter might be brought up before the House and a decision taken by the House by way of a Resolution."

लेकिन सब से चर्चा करके वह जिस नतीजे पर पहुंचे, उसका जिक्र किया।

"But it has been felt that instead of taking a formal decision by means of a Resolution which would mean division and the vote, it is better if I make a statement with regard to the National Anthem reflecting the consensus of the House."
I am not saying it but it is meaning that.
"Accordingly, I make this statement."

उन्होंने कहा

"The composition consisting of the words and music known as Jana Gana Mana is the National Anthem of India, subject to such alterations in the words as the Government may authorise as occasion arises and the song Vande Mataram which has played a historic part in the struggle for Indian freedom shall be honoured equally with Jana Gana Mana and shall have equal status with it."
Now, this was the decision announced by President Dr. Rajendra Prasad, as Chairman of the Constituent Assembly, on behalf of the whole House. And there was applause in the House.

इसलिए बहुत सालों तक यहां ठजन गण मन' नहीं होता था। जब शिवराज पाटील इस सदन के अध्यक्ष थे, उन्होंने जनरल परपसेज कमेटी की एक मीटिंग बुलायी थी। उसमें यह प्रस्ताव रखा। शायद महाराष्ट्र विधान सभा में होता होगा। वह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ। वह निर्णय सर्कुलेट हो गया। उसके बाद कुछ लोगों ने पत्र लिख कर आपत्ति की। मैं भी उनसे मिला। मैने ठवंदे मातरम्' करने के लिए कभी आग्रह नहीं किया। उन्होंने कहा कि सर्वसम्मत निर्णय हुआ है, अगर कोई उसका विरोध करेगा तो वह ठीक और उचित बात नहीं होगी। हमारी पार्टी के उस समय ११९ मैम्बर थे। हमने कहा कि हमें इसके बारे में सोचना पड़ेगा। ११९ मैम्बर खड़े होकर ठवंदे मातरम्' गाएं, यह नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जो सर्वसम्मति से निर्णय हुआ है, वह कार्यान्वित होगा। उन्होंने वह निर्णय कार्यान्वित किया। उनको और इस हाउस को इस

बात का अभिनन्दन है कि उन्होंने महत्वपूर्ण बात की। जो चीज सचमुच १९४७ के तुरन्त बाद होनी चाहिए थी, वह उस समय हुई।

मुझे याद है, पहले सिनेमा घरों में ठजन गण मन' होता था लेकिन हिन्दुस्तान साफ्ट स्टेट है। उस समय कुछ लोग उसका अनादर करते हुए चले जाते थे इसलिए सरकार ने निर्णय किया कि इसे सिनेमा घरों में दिखाना बंद किया जाए। दुनिया के सभी देशों में अगर कोई राष्ट्रगान का अनादर करता है तो सरकार को चिंता होती है कि इस अनादर को रोका जाए, उसके सामने झुका न जाए। हमारे यहां यह प्रवृत्ति है कि कोई अनादर करता है तो कहा जाता है कि इतना बड़ा देश है, इतने लोगों को कैसे रोक सकते हैं? मैं मानता हूं कि इन पचास सालों में यहां राष्ट्रीय सम्मान के चिन्हों के प्रति जो रवैया रहा वह देश की कमजोरी के कारण हुआ। यह भी एक कारण था कि हमने साफ्ट स्टेट बनना शुरु कर दिया।

मैं विनम्रता से सभी से अनुरोध करूंगा कि राष्ट्र के सम्मान चिहनों के बारे में बहस मत खड़ी करिये। कहीं-कहीं पर थोड़ी बहुत गलती हो जाए तो उस गलती को ठीक करने के लिए आप बताइए कि यह ठीक नहीं है, ऐसा करो, वैसा करो।

Do not make these issues a matter of public debate.

अगर आप पब्लिक डिबेट के इश्यू बनाएंगे तो निश्चित रूप से जिनको यह बात ज्यादा तीव्र लगती है, उनको मैं कहूंगा कि इसमें ठजन गण मन' के लिए कोई शब्द प्रयोग नहीं किया है। अगर राजेन्द्र बाबू ने किसी के लिए प्रयोग किया है तो ठवन्दे मातरम्' के लिए किया है, जिसमें कहा है कि

"It is because that it has played an historic role in the struggle for Indian Freedom." I do not want to bore you.

नहीं तो महात्मा गांधी के वक्तव्य निकालूंगा तो ऐसे-ऐसे वक्तव्य हैं इसके बारे में कि जिनकी तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि उस समय के लोग समझते थे कि ठवन्दे मातरम्' का क्या स्थान है और आज ठवन्दे मातरम्' के लिए कोई फतवा निकाले और उसकी भी जय-जयकार हो कि बहुत अच्छा किया, ठीक किया और उन्होंने अगर कहा कि स्कूलों के बच्चे स्कूल छोड़कर चले जाएं जहां ठवन्दे मातरम्' होता है तो उसकी प्रशंसा करना मुझे बहुत आश्चर्यजनक लगता है।

How can you plead like that? You just cannot do that.

और इसीलिए मैं निवेदन करूंगा सभी से कि अट्रॉसिटीज़ ऑन माइनॉरिटीज़

... (व्यवधान)

श्री जी.एम.बनातवाला : यह ज़रा गलत समझ लिया गया है। उन्होंने ऐसा नहीं कहा था।

... (व्यवधान)

ज़रा गलतफहमी है। मैं मिसअंडरस्टैण्डिंग दूर करना चाहता था। अगर आप मिसअंडरस्टैण्डिंग दूर करने की इजाज़त न दें तो यह आपकी मर्जी है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं हर गलतफहमी को दूर करने की इजाज़त दे रहा हूं।

श्री जी.एम.बनातवाला : मैं इतना ही कहना चाहता था कि जिस कदर मुझे मालूम है और अखबारात पढ़कर मुझे मालूम है, वह यह है कि मौलाना अली मियां ने जो कहा वह फतवा नहीं है क्योंकि फतवा कोई जारी नहीं करता। उन्होंने ऐडवाइस दी कि अगर मुसलमान बच्चों को कंपलसरी किया जाए और इस बात पर मजबूर कर दिया जाए कि वह पढ़ें तो फिर बेहतर यह होगा कि वह इन स्कूलों को छोड़ दें। मजबूरी की बात थी कि अगर कोई कहे कि तुम्हें सरस्वती वन्दना पढ़नी ही पड़ेगी तो बात अलहदा है और वह शिर्क हो जाती है। उसकी बात उन्होंने कही थी। वही बात जो आपने पहले कंपल्शन के बारे में कही थी, वही कंपल्शन की बात है कि जो शिर्क पर जाकर पहुंचती थी, उन्होंने की थी जहां तक मैं समझता हूं उनकी बात को।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, मैं समझता हूं कि मुझे और कुछ विशेष नहीं कहना, सिवाय इस बात को फिर से दोहराने के कि जहां तक इस सरकार का सवाल है ... (व्यवधान)

SHRI ABUL HASNAT KHAN (JANGIPUR): What about one culture?
SHRI L.K. ADVANI: I will come to one culture. I am grateful to you.

क्योंकि मैं उसका जिक्र करना चाहता था।

मेरे मित्र सामने बैठे हुए हैं। १९६१ में ए.आई.सी.सी. का सेशन मदुरई में हुआ था। मैंने पिछले दिनों पब्लिकेशन्स डिविज़न का एक ऑफिशियल पब्लिकेशन नेहरू जी के भाषणों पर पढ़ते हुए देखा कि ए.आई.सी.सी. के सेशन के अवसर पर पंडित नेहरू ने एक बहुत ही मार्मिक बात कही। मदुरई दक्षिण के उन नगरों में से एक है जो एक प्रकार से देवालयों का नगर है। वहां का मीनाक्षी मंदिर बहुत प्रसिद्ध है और वहां पर उन्होंने कहा --

"India has, for ages past, been a country of pilgrimages. All over the country, you find these ancient places from Badrinath, Kedarnath and Amarnath high up in the snowy Himalayas down to Kanyakumari in the South. What has drawn our people from the South to the North and from the North to the South in these great pilgrimages?"....
There is a question mark and then he answers.
"It is the feeling of one country and one culture and this feeling has bound us together."
This is not my choice...(Interruptions)
but not our opinion...(Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: It may be. But I am not yielding...(Interruptions) Let me complete it...(Interruptions) Yes, you can disagree with Pandit Jawaharlal Nehru. But, I am sure, our friends sitting opposite cannot disagree with Pandit Jawaharlal Nehru...(Interruptions)
issue...(Interruptions)
SHRI L.K. ADVANI: It is because Shri Sangma belongs to the Congress...(Interruptions) I am not yielding... (Interruptions)
17.00 hrs.

This conception of Bharat as one great land, which the people considered a holy land, has come down the ages and has joined us together. Even though we have had different political kingdoms, and even though we may speak different languages, this silken bond still keeps us together in many ways. PROF. P.J. KURIEN : Panditji also said unity in diversity.
SHRI L.K. ADVANI: Yes, unity in diversity. But, it is this unity and it is this silken bond which brings about unity. Therefore, I respect Tamil as much as I respect Sindhi or Hindi or Marathi. I respect various religions of the country.

आपने बहुत सही कहा कि

Intolerance has no place in Hinduism. I would go further and say, intolerance has no place in the culture of this country. It may have place in the culture of another country. It is not without significance.

उस दिन हमारे कुछ मित्रों ने जब ८५ परसेंट की बात कही तो आपकी जो प्रतिक्रिया हुई, वह मैं समझ गया क्योंकि उसमें से भाव यही निकलता था जैसे मानो ८५ परसेंट के कारण १५ परसेंट को मानना पड़ा है, यह गलत बात है। मैं मानता हूं कि १५ परसेंट जो यहां हैं, उनका कल्चर भी वही है। उनका धर्म भले ही दूसरा रहा हो, मजहब दूसरा रहा हो लेकिन टालरैंस बेसिक है। सब में है। किसी में अगर कोई फर्क आया है तो पोलिटिक्स के कारण आया है, संस्कृति के कारण नहीं आया है।

Shri Shiv Shanker, I had a very pleasant experience last year.

लॉस्ट ईयर मैं हैदराबाद गया। हैदराबाद में मुझे वहां के आर्च बिशप आल्लपा मिले। उन्होंने कहा कि -

I totally endorse your concept of cultural nationalism. I would say personally, "I am a Christian by religion but I am a Hindu by culture. This is what he said." When he said this, he was not referring to any narrow concept of Hinduism.

जब हिन्दू की कोई बात कही जाती है। इसलिए अगर किसी ने कहा कि यह देश सेक्युलर है, १९४७ में हम सेक्युलर हुए-किस आधार पर हुए कि हिन्दुओं का बहुमत कहां है, मुसलमानों का बहुमत कहां है। कितना रक्तपात हुआ, कितने लाखों करोड़ों लोग इधर से उधर गये। पाकिस्तान ने अपने को इस्लामिक राज्य घोषित किया। इस्लामिक राज्य की घोषणा का अर्थ है कि वहां इस्लाम को मानने वाले पहले दर्जे के नागरिक हैं। अन्य दूसरे दर्जे के नागरिक हैं। इस्लाम के ही अंदर बहुत सारे ऐसे लोग हैं जिन्हें वहां कोई स्थान नहीं है। दूसरी तरफ हिन्दुस्तान की कांस्टीटुएंट असेम्बली की सारी डिबेटस देश लीजिए, उसके सारे पेजों को देख लीजिए। किसी ने भी नहीं कहा कि हिन्दुस्तान को हिन्दू राज्य घोषित किया जाये।

There was unanimity.

इस देश में मजहब के आधार पर भेदभाव नहीं होगा। इस देश में सेक्युलरवाद का अर्थ यही है कि मजहब के आधार पर कोई भेदभाव नहीं, सभी को बराबरी की गारंटी, सभी को सुरक्षा की गारंटी, तो मैं मानता हूं कि यह देन कांस्टीच्यूएंट असेम्बली की इतनी नहीं है जितनी हिन्दुस्तान की प्राचीन संस्कृति की देन है। संस्कृति और परम्परा के कारण यह देश सेक्युलर है और उस परम्परा को आप भारतीय कहें, हिन्दू कहें, इंडियन कहें, शब्दों के बारे में मेरा कोई झगड़ा नहीं है। लेकिन मैं मानता हूं कि हिन्दुओं की बात मत करो क्योंकि फिर उनको कहा जाएगा कि यह धर्म चक्र कहां से आ गया। 'धर्म चक्र प्रर्वतनाय' यहां से निकालो। कितनी बार पंडित नेहरू जी विदेशों में गये। श्रीमती इंदिरा गांधी जी विदेशों में जाती थीं। यूनाइटेड नैशन्स में जब भी भाषण देती थी तो वह आरंभ ऋग्वेद की रचना से करती थी या किसी उपनिषद के श्लोक से शुरू करती थी। उस पर कोई आपत्ति नहीं उठाता था कि आप सेक्युलर देश की हैं, आप ऋग्वेद और उपनिषद की क्यों चर्चा करती हैं।लेकिन आज का वातावरण जो हम पैदा कर रहे हैं उसमें यह बात बढ़ रही है और धीरे धीरे कोई संस्कृति की बात करता है तो मानो उसने अनर्थ कर दिया। कोई अगर सरस्वती वंदना का जिक्र करता है तो पता नहीं उसने क्या कर डाला, ऐसा लगने लगता है।

मैं निवेदन करूंगा कि इस प्रकार के भाव मत लाइए। यह देश एक है, इस देश में मजहब अलग-अलग हो सकते हैं, भाषाएं अलग-अलग हो सकती हैं लेकिन इस देश की मूल संस्कृति को कम्पोज़िट कहिए, वेरीड कहिए लेकिन उसकी मूल यूनिटी वही है, जिसे उन्होंने सिलकन बॉड कहा है, रेशमी रेखा कहा है, उसे मानिए। मुझे विश्वास है कि जहां तक सरकार की बात है, वह अपने दायित्व में कभी नहीं चूकेगी। यदि किसी के साथ भी अन्याय होगा तो हम बीच में आएंगे, उस सरकार को भी कहेंगे, हम भी हस्तक्षेप करेंगे।

MR. SPEAKER: The House will now take up further discussion on the Bill listed as item no.12 in the List of Business.
THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF TOURISM (SHRI MADAN LAL KHURANA): Mr. Speaker, Sir, I would request that item no.18 may be taken up tomorrow.

MR. SPEAKER: We are continuing with the Bill listed as item no.12 in the List of Business and not item no.18. Vaidya Vishnu Datt.

_____

The House stands adjourned to meet again tomorrow, the 17th December 1998 at 1100 hours.

19.06 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on

Thursday, December 17, 1998/Agrahayana 26, 1920 (Saka)